मूल्य : एक प्रति ₹ 0.50 वार्षिक ₹ 5.00

नेशनल बुक ट्रस्ट संवाद

वर्ष 19, अंक 5

nbt.india

मई 2014

अंदर के पृष्ठों में . . . . . ➤

संस्कृतियों के बीच सेतु निर्माण	2
जम्मू-कश्मीर के राज्यपाल से न्यास-निदेशक की मुलाकात	2
सिरसा पुस्तक प्रदर्शनी	2
प्रकाशकों के साथ बैठक	3
दिल्ली में पुस्तक प्रदर्शनी	3
प्रतिलिप्यधिकार एवं रिप्रोग्राफी पर संगोष्ठी	3
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास से प्रकाशित कुछ नवीनतम पुस्तकें : एक परिचय	4
दरभंगा साहित्यिक कार्यक्रम	5
पुस्तक परिचय	6
श्रद्धांजलि	8
न्यासकर्मी का निधन	8
सेवानिवृत्ति	8

नवीनतम प्रकाशन

उषाकिरण खान : संकलित कहानियाँ

पृ. 152 ₹ 135

ISBN 978-81-237-7118-2

क्या भारतीय पाठक की रुचि बदल रही है?

आज यदि भारतीय पाठकों की पुस्तकों की अलमारी पर एक दृष्टि डाली जाए तो पुस्तकों के प्रति उनकी बदलती रुचि एवं प्राथमिकताएँ स्पष्ट रूप से देखी जा सकती हैं। कथेतर पुस्तकों की बढ़ती बिक्री ने प्रकाशकों को आश्चर्यचकित कर दिया है। स्वावलंबन पर आधारित पुस्तकें, यात्रा-वृत्तांत, पाकशास्त्र तथा पुराणशास्त्र जैसी पुस्तकें पाठकों के लिए नए आकर्षण का केंद्र बनती जा रही हैं। इन पुस्तकों ने क्लासिक, रोमांस व रोमांच जैसी पुस्तकों की बिक्री को कम कर दिया है।

प्रौद्योगिकी, इलेक्ट्रॉनिक्स व सोशल मीडिया, विशेष रूप से इंटरनेट के आगमन से यह माना जाता है कि 'पुस्तक एवं पठन जगत' के समाप्त होते अस्तित्व को बचाया जा सकता है। इतना ही नहीं, प्रौद्योगिकी ने आज पाठक के लिए अनेक नए द्वार खोल दिए हैं। शब्दों की दुनिया तक पहुँचने के लिए पाठकों को अद्भुत विकल्प प्रस्तुत कर प्रौद्योगिकी अकसर एक मार्गदर्शक की भूमिका निभाती है। वर्तमान समय में कंप्यूटर पर फ्लिपकार्ट, अमेज़न व रेडिफ जैसे मंच तथा अन्य छोटी व बड़ी वेबसाइटें, ऑनलाइन बुकस्टोर के माध्यम से लाखों पाठकों तक पुस्तकें पहुँचाने का कार्य कर रही हैं। आज इंटरनेट विस्फोट ने खरीददार को जागरूक एवं प्रौद्योगिकी की समझ रखने वाला बना दिया है जो इन स्टोर द्वारा दिए गए मूल्यों का तुलनात्मक ज्ञान रखता है। इसके द्वारा ही एक अत्यंत प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण का निर्माण हुआ है जो उपभोक्ताओं के लिए अत्यधिक लाभदायक है। यह नया खरीददार पुस्तकों का चयन करने में अत्यंत चयनात्मक है जो इस प्रक्रिया के माध्यम से शैलियों की विविधता को प्रभावशाली बना रहा है। ये खरीददार प्रकाशन बाजार पर अपने तरीके से दबाव बना रहे हैं। उदाहरण के लिए आजकल के बच्चे इलेक्ट्रॉनिक मीडिया पर मौजूद मनोरंजन

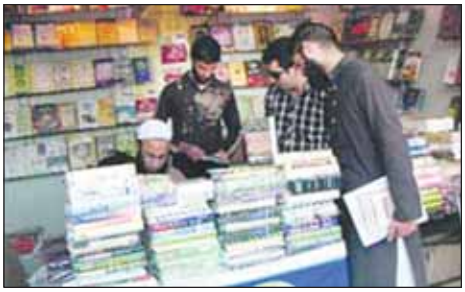

के सभी साधनों तक पहुँच चुके हैं। वे नए युग के कार्टून पात्रों तथा अपने प्रेरणास्रोतों पर आधारित पुस्तकों की ही माँग करते हैं। इसका अर्थ है कि यह परंपरागत लोककथाओं तथा दादी माँ की कहानियों से तीव्र तथा स्पष्ट पलायन है जो कि पहले की पीढ़ी के बहुत पसंदीदा हुआ करते थे।

ऐसा क्यों होता है कि नए लेखकों द्वारा पौराणिक कथाओं तथा महाकाव्यों पर किए गए कार्य को सराहा जाता है जैसे अमीश त्रिपाठी का 'शिव ट्रायलॉजी' या क्रिस्टोफर डोयले का 'द महाभारत सीक्रेट' या फिर देव दत्त पटनायक का हिंदू देवताओं के मंदिरों तथा पुराणों पर पुनर्वाचन। प्रकाशकों के अनुसार इनमें कथानक समान है तथा व्यवस्था में भी कोई बदलाव नहीं हुआ है, परंतु पाठकों द्वारा इसको अपनाने का महत्वपूर्ण कारण इन लेखकों का युगों पुरानी कथाओं को देखने का परिप्रेक्ष्य तथा वर्तमान समय में इन लेखकों द्वारा विभिन्न अवधारणाओं को प्रस्तुत करने का अद्भुत ढंग है।

हमारे समाज में मुद्रित पुस्तकों का महत्वपूर्ण स्थान है। पुस्तकों को पढ़ने का रोमांच कुछ वर्षों में ही समाप्त होने वाला नहीं है। उद्योग विशेषज्ञों के अनुसार मुद्रित पुस्तकों की परंपरा जो मानव इतिहास की जड़ों में बसी हुई है वह हमेशा रहेगी, चाहे प्रौद्योगिकी या अन्य कोई भी बदलाव क्यों न आ जाए।

संस्कृतियों के बीच सेतु निर्माण

गुवाहाटी, हेदायतपुर स्थित नवसृजित राष्ट्रीय पुस्तक न्यास पुस्तक प्रोन्नयन केंद्र, असम राष्ट्रभाषा प्रसार समिति भवन में 12 अप्रैल, 2014 को विजय शंकर बर्मन लिखित पुस्तक 'कुरुनदोहीर कविता' का लोकार्पण किया गया। तमिल क्लासिकल संगम साहित्य कुरुनतोकई, सर्वाधिक महत्वपूर्ण कवितापूर्ण निधि, जो ईसा पूर्व 200 से 200 ई. के बीच रची और संकलित की गई थी, के असमिया भाषा में अनुवाद का यह पहला उदाहरण है।

प्रख्यात आलोचक एवं अनुवादक प्रो. प्रदीप आचार्य ने इस पुस्तक का लोकार्पण किया। इस कार्यक्रम में असम के अनेक नामचीन शख्सियतों की उपस्थिति रही जिनमें बोडो के साहित्य अकादेमी विजेता और प्रख्यात कवि-लोककथाकार डॉ. अनिल बोडो; कविगण अनीस-उज-जमान, लुत्फा हनुम सेलिमा बेगुम, मनोज बोरपुजारी; कवि-अनुवादक दिनकर कुमार; पत्रकार समुद्रगुप्त काश्यप, शिवाशीष ठाकुर, दिगंबर पटोवारी; कलाकार-संगीतकार अमिनुल हक, डॉ. तापती बरुआ महत्वपूर्ण थे।

पुस्तक का लोकार्पण करते हुए आचार्य ने इस अनुवाद कार्य की 'पथप्रदर्शक कार्य' कहकर प्रशंसा की। उनका कहना था कि चूँकि अनुवाद एक कठिन और पीड़ादायी कार्य है, अनुवादक विजय शंकर बर्मन एक भिन्न संस्कृति की पुस्तक को अनुवाद के जरिये असमिया भाषा में सफलतापूर्वक ला पाए हैं। इस अवसर पर डॉ. अनिल बोडो और समुद्रगुप्त काश्यप ने भी अपने विचार रखे।

एट्टुथोगई शृंखला की आठ तमिल क्लासिक्स में से एक और विश्व साहित्य की प्राचीनतम कृतियों में से एक, कुरुनतोकई को साहित्य की एक अनूठी और महत्वपूर्ण कृति माना जाता है जिसमें प्यार है, भोग है, अलगाव है और रोमांस है। इस असमिया अनुवाद में परंपरा, विषय, कवि, कविताएँ आदि पर विस्तृत टिप्पणी के साथ 60 कविताएँ हैं, साथ ही, चार प्रख्यात तमिल विद्वान-अनुवादक, नामतः प्रो. एम.एल. थंगप्पा, डॉ. निर्मल सेल्वामनी, डॉ. एस.ए. वेंगाडा सुप्राया नयगर एवं डॉ. बी. रविकुमार के चार महत्वपूर्ण आलेख भी हैं।

जम्मू-कश्मीर के राज्यपाल से न्यास-निदेशक की मुलाकात

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के निदेशक डॉ. एम.ए. सिकंदर ने 27 मार्च, 2014 को श्रीनगर के राजभवन में जम्मू-कश्मीर के राज्यपाल श्री एन.एन. वोहरा से मुलाकात की। डॉ. सिकंदर ने राज्यपाल महोदय को राष्ट्रीय पुस्तक न्यास द्वारा देश भर में पुस्तकोन्नयन एवं पुस्तक संस्कृति के क्षेत्र में किए जा रहे कार्यों के संबंध में जानकारी दी।

राज्यपाल श्री वोहरा ने न्यास-निदेशक से उचित मूल्य पर गुणवत्तापूर्ण पुस्तकों के न्यास द्वारा किए जा रहे प्रकाशन तथा राज्य में पुस्तक मेलों एवं प्रदर्शनियों, लेखकों, प्रकाशकों और पुस्तक-प्रेमियों से संवाद आदि के अवसरों के संबंध में विचार-विमर्श किया। राज्यपाल महोदय ने न्यास द्वारा उत्कृष्ट साहित्यिक कृतियों एवं महत्वपूर्ण व्यक्तित्वों के जीवनचरितों के विभिन्न भाषाओं में अनुवाद किए जाने एवं किफायती मूल्य पर बेचे जाने के लिए न्यास की प्रशंसा की। राज्यपाल महोदय ने रा.पु. न्यास को राज्य में पुस्तक मेलों के आयोजन के लिए हर तरह की मदद देने का आश्वासन दिया।

सिरसा पुस्तक प्रदर्शनी

जिला पुस्तकालय, सिरसा के सहयोग से राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत ने जिला पुस्तकालय, सिरसा, हरियाणा के परिसर में 21 से 25 मार्च, 2014 तक सिरसा पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया।

प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए सिरसा के उपायुक्त श्री आशीष सिंह आईएएस ने रा.पु. न्यास द्वारा सिरसा के पुस्तक-प्रेमियों के लिए किफायती कीमत में उत्कृष्ट पुस्तकों की एक बड़ी रेंज लाने के लिए न्यास की सराहना की। उन्होंने आशा व्यक्त की कि सिरसा के छात्र और आम पाठक पुस्तकें खरीदकर इस अवसर का लाभ उठाएँगे।

इस पुस्तक प्रदर्शनी को देखने सिरसा और आसपास के स्कूल-कॉलेजों के छात्र-छात्राएँ बड़ी संख्या में पहुँचे।

इस प्रदर्शनी का समन्वय न्यास में उप-निदेशक श्री इमरानुल हक ने किया।

प्रकाशकों के साथ बैठक

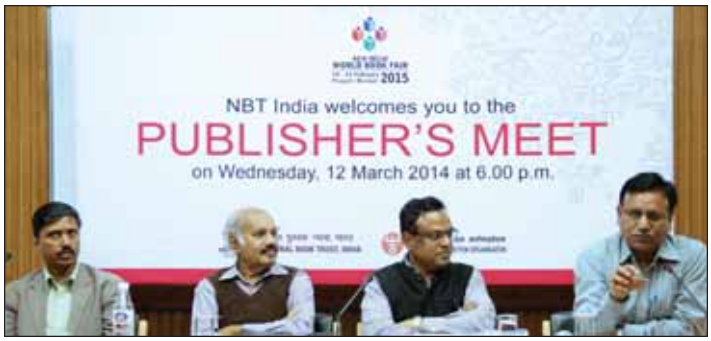

14 से 23 फरवरी, 2014 की अवधि में आयोजित नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला की अपूर्व सफलता के बाद प्रकाशकों की एक बैठक का आयोजन किया गया जिससे कि पुस्तक मेले में हुई दिक्कतों और कठिनाइयों को जाना जा सके। जैसा कि राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के निदेशक डॉ. एम.ए. सिकंदर ने बैठक में अपने स्वागत उद्‌बोधन में कहा, ''प्रकाशकों के साथ यह बैठक करने का मकसद उनके विचारों को जानना है जिससे आगे से पुस्तक मेले को और बेहतर ढंग से तथा बेहतर सुविधाओं के साथ आयोजित करने में मदद मिले।''

प्रकाशकों की एक बड़ी उपस्थिति को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के अध्यक्ष श्री ए. सेतुमाधवन ने कहा, ''पुस्तक मेले को द्विवार्षिक से वार्षिक करना एक बड़ा ही मुश्किल कार्य था, खास तौर से एक सरकारी संगठन के लिए। लेकिन पुस्तक उद्योग के स्टेकहोल्डरों से प्राप्त जबरदस्त समर्थन से हम मिलजुलकर सफलतापूर्वक ऐसे बड़े आयोजन कर पाए।''

पुस्तक मेले में शुरू की गई कुछ नई पहलों, जिससे कि मेला कुछ अधिक सार्थक बन पड़ा, को रेखांकित करते हुए न्यास-अध्यक्ष ने कहा, ''सीईओ स्पीक, लेखक मंच तथा प्रतिलिप्यधिकार मंच जैसे आयोजनों ने प्रतिभागियों में कहीं-न-कहीं रुचि जगाई।'' उन्होंने भारतीय भाषाओं के प्रकाशकों से आह्‌वान किया कि वे ऐसे व्यापारिक सत्रों में और अधिक रुचि लें। प्रकाशकों के हित में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास कथा, कथेतर एवं बाल पुस्तकों के तीन प्रतिलिप्यधिकार सूची-पत्र निकाल रहा है। इसके लिए प्रकाशक अपनी पुस्तकों के प्रोन्नयन के लिए अपनी प्रविष्टियाँ भेज सकते हैं।

रा.पु. न्यास एवं इसकी टीम को सफलतापूर्वक पुस्तक मेले के आयोजन के लिए भारतीय प्रकाशक संघ के अध्यक्ष, श्री सुधीर मल्होत्रा ने धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा, ''हाल के वर्षों में हमने ऐसा बेहतरीन पुस्तक मेला नहीं देखा।''

बैठक में जिन अन्य मसलों को उठाया गया उनमें स्टॉल का किराया भी एक मुद्‌दा रहा, जो छोटे और स्वतंत्र प्रकाशकों के लिए एक बड़ी बाधा के रूप में था। कुछ प्रकाशकों द्वारा अविवेकपूर्ण ढंग से दी गई छूट का मुद्‌दा भी उठाया गया।

इस अवसर पर मानव संसाधन विकास मंत्रालय में पुस्तक प्रोन्नयन प्रभाग के निदेशक श्री जी.आर. राघवेंद्र एवं आईटीपीओ के श्री आर.के. सिंह ने भी प्रकाशकों को संबोधित किया। उपस्थित प्रकाशकों में रत्ना सागर, स्टार पब्लिकेशंस, स्टर्लिंग पब्लिशर्स, मकाओ बुक्स, लिफि पब्लिकेशंस एवं ऑल एबाउट पब्लिशिंग के प्रतिनिधि शामिल थे।

दिल्ली में पुस्तक प्रदर्शनी

विश्व पुस्तक एवं प्रतिलिप्यधिकार दिवस, 23 अप्रैल, 2014 के अवसर पर राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत एवं साहित्य अकादेमी ने मिलकर अकादेमी परिसर, रवींद्र भवन, नई दिल्ली में एक पुस्तक प्रदर्शनी लगाई। विदित हो कि यूनेस्को की संकल्पना के अनुरूप 1995 से यह दिवस पूरी दुनिया में पुस्तक पठन को प्रोत्साहित करने एवं प्रतिलिप्यधिकार कानूनों के माध्यम से पुस्तक समेत बौद्धिक संपदा के संरक्षण के उद्‌देश्य से मनाया जाता है।

प्रकाशन एवं पठन प्रोन्नयन को समर्पित, देश के दो महत्वपूर्ण एवं शीर्षस्थ संगठनों द्वारा रवींद्र भवन परिसर में पहली बार संयुक्त रूप से आयोजित इस प्रदर्शनी को लेकर पुस्तक-प्रेमियों में अपूर्व उत्साह था। प्रख्यात साहित्यकार और साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष प्रो. चंद्रशेखर कंबार, श्री राधेश्याम मंगोलपुरी, श्री प्रकाश टाटा आनंद तथा राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के निदेशक डॉ. एम.ए. सिकंदर इस प्रदर्शनी को देखने वाले महत्वपूर्ण आगंतुकों में थे। इस प्रदर्शनी का समन्वय साहित्य अकादेमी की उप सचिव सुश्री गीतांजलि चटर्जी एवं राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत में पंजाबी भाषा के संपादक श्री मिसरदीप भाटिया ने किया।

प्रतिलिप्यधिकार एवं रिप्रोग्राफी पर संगोष्ठी

इंडियन रिप्रोग्राफिक राइट्स ऑर्गेनाइजेशन (आईआरआरओ) ने 'प्रतिलिप्यधिकार एवं रिप्रोग्राफी–सृजनात्मकता एवं आर्थिक विकास के लाभ' विषय पर 17-18 फरवरी, 2014 को इंडिया हैबिटाट सेंटर, नई दिल्ली में एक अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया। इस संगोष्ठी में प्रतिलिप्यधिकार एवं रिप्रोग्राफी के विविध पक्षों के भारतीय एवं विदेशी विशेषज्ञ, अग्रणी लेखक, प्रकाशक एवं कानून के विद्वान, विशेषतः बौद्धिक संपदा अधिकार विषय से जुड़े, विद्वानों ने भाग लिया।

आईआरआरओ के पूर्व अध्यक्ष, श्री अशोक के. घोष ने अपने स्वागत संबोधन में कहा कि आईआरआरओ को सरकार से और अधिक सहयोग की जरूरत है। साथ ही इसके कार्यों के सुचारु रूप से संपादित करने में और अधिक उपकरणों की जरूरत भी उन्होंने जताई।

मुख्य अतिथि, कॉपीराइट बोर्ड के पूर्व अध्यक्ष एवं राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के भी पूर्व अध्यक्ष, श्री बी.के. शर्मा ने कॉपीराइट एक्ट के विविध पक्षों की जटिलताओं पर चर्चा की और श्रोताओं को इस क्षेत्र में हुए नए विकासक्रम तथा उनके कार्यान्वयन आदि के बारे में जानकारी दी। 'सृजनात्मकता एवं आर्थिक विकास के लाभ' विषय पर बीज संबोधन किया प्रख्यात आईपीआर वकील, श्री प्रवीण आनंद ने। उन्होंने कॉपीराइट एक्ट के बारे में संक्षेप में विश्लेषणात्मक जानकारी दी।

संगोष्ठी में अन्य वक्ता थे–यूके के कॉपीराइट लाइसेंसिंस एजेंसी के मुख्य कार्यकारी केविन फिट्‌जगेराल्ड, यूएसए के कॉपीराइट क्लीयरेंस सेंटर के कार्यकारी निदेशक माइकल हीली, इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ रिप्रोडक्शन राइट्स ऑर्गनाइजेशन के मुख्य कार्यकारी ओलाव स्ट्रोक्कमो, यूके के पब्लिशर्स एसोसिएशन की निदेशक श्रीमती एम्मा हाउस, आईआरआरओ के अध्यक्ष श्री सुधीर मल्होत्रा, दिल्ली विश्वविद्यालय, लॉ सेंटर-I, की एसोसिएट प्रोफेसर, डॉ. पूनम दास, डेलनेट (DELNET) के निदेशक डॉ. एच.के. कॉल, कैंब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस के पूर्व प्रबंध निदेशक, श्री मानस प्रतिम सैकिया; हार्पर कॉलिंस इंडिया के प्रबंध निदेशक, श्री पी.एम. सुकुमार; एडवोकेट, श्री जगदीश सागर; साइकृष्णा एसोसिएट्स के एडवोकेट, श्री अमीत दत्ता एवं ऑथर्स गिल्ड ऑफ इंडिया के महासचिव, डॉ. एस.एस. अवस्थी।

जिन विषयों के संबंध में प्रस्तुतियाँ दी गईं, वे थे– (i) आईआरआरओ का भारतीय एवं अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य; (ii) प्रकाशन की आर्थिक मूल्य शृंखला; (iii) भारतीय संदर्भ में रिप्रोग्राफी में फेअर डीलिंग, फेअर यूज तथा कानूनी मुद्‌दे; (iv) भारत की शिक्षा पर राष्ट्रीय नीति के आलोक में रिप्रोग्राफिक अधिकार; (v) पुस्तकालय एवं सूचना सेवाओं के विशेष परिप्रेक्ष्य में रिप्रोग्राफी।

आईआरआरओ के पूर्व महासचिव श्री आनंद भूषण ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास से प्रकाशित कुछ नवीनतम पुस्तकें : एक परिचय

पुष्पा सक्सेना : संकलित कहानियाँ पृ. 236 ₹ 195

भारत के इलाहाबाद शहर में जन्मी, पली-बड़ी लेखिका, **डॉ. पुष्पा सक्सेना** एक लंबे समय से अमेरिका में रह रही हैं। उन्होंने अपनी कहानियों में अमेरिका में रह रहे भारतीयों के अमेरिकी जीवन के ताने-बाने को बुना है। उनके जीवन-प्रसंग, तनाव तथा सरोकारों को प्रस्तुत करते हुए वे अमेरिकी परिवेश एवं अपने आस-पास घट रही घटनाओं के साक्षात अनुभवों को ही अपनी कहानी के कथानक के रूप में रखती है। प्रस्तुत संकलन में लेखिका के विदेश-प्रवास के दौरान लिखी गई 20 कहानियाँ हैं जिनमें जीवन के इंद्रधनुषी रंगों की छटा है। ये कहानियाँ भारत के एक ऐसे शिक्षित समाज की कहानियाँ हैं जो उच्च शिक्षा, बेहतर करियर और बेहतर जीवन के लिए अमेरिका, इंग्लैंड या अन्य देशों को जा रहे हैं। इन कहानियों में भारतीय जीवन-शैली और अमेरिकी जीवन-शैली तथा मूल्यों की टकराहट है, द्वंद्व में फँसा मन अपनी जड़ों की ओर वापस लौटना चाहता है, पर परिस्थितियाँ उसके कदम इस तरह जकड़ लेती हैं कि वह न वापस लौट पाता है और न वहाँ के जीवन-मूल्यारें को अपना पाता है और दूर से स्वर्ग लगने वाला जीवन उसके लिए दुःस्वप्न बनकर रह जाता है। इस मृगतृष्णा की कितनी बड़ी कीमत उन्हें चुकानी पड़ती है यह इनकी कहानियों में स्पष्ट झलकता है। लेखिका नारी चेतना, नारी आंदोलन तथा नारी सशक्तीकरण से विशेष प्रभावित हैं, और यही कारण है कि इनकी कहानियों में नारी मन की सतहों को प्रभावी रूप से पर्त-दर-पर्त खोला गया है। पठनीय तथा संप्रेषनीय भाषा में ये कहानियाँ व्यापक प्रवासी परिदृश्य का उद्घाटन करती है जो अमेरिका के माया-जान को खोलता और मृगतृष्णा की सत्यता को उद्घाटित करता है। ISBN 978-81-237-7117-5

मीरा सीकरी : संकलित कहानियाँ पृ. 134 ₹ 95

अविभाजित भारत के गुजराँवाला में जन्मी **मीरा सीकरी** (जून 1941) की कहानियों में उन स्थितियों और मनोदशाओं का संवेदनात्मक एवं बेलाग चित्रण किया गया है, जो संबंधों के ठंडे पड़ते जाने और अंततः खत्म होने के हालात को दर्शाते हैं। बाहर से भीतर की ओर यात्रा करती इन कहानियों में निजी एवं पारिवारिक संबंधों के पीछे अपनों के संबंध कैसे संबंधों को प्रभावित-संचालित करते हैं इसकी महीन बुनावट विशेष रूप से देखने को मिलती है। संबंधों की जकड़न से बाहर आने की छटपटाहट और निर्णय लेने की क्षमता का बोध कई कहानियों में देखने को मिलता है। विद्रूप एवं विसंगत स्थितियों को लेखिका ने बड़ी तटस्थता से उधेड़ा है। संकलन में कई कहानियाँ समाज के हाशिये पर, निचली सतहों पर जीवनयापन करने वाले लोगों की जिंदगी की गहराई में जाकर उन्हीं की भाषा में झाँकने वाली कहानियाँ हैं। अकेलेपन, भय और बेचैनी की मनोदशाओं को कथा में समन्वित कर देना, अकेलेपन में अपनत्व की बनती-मिटती रेखाओं को टटोलते जाना मीरा सीकरी की एक और कथा विशेषता है। लेखिका के कथा-विन्यास में शब्दों की फिजूलखर्ची कहीं नहीं है। वास्तविकता और कला के सीमांत इन कहानियों में, अनुभव और विचार की बानगियों के साथ खुलने और फैलने के साथ-साथ पाठकीय चेतना में उतरते गए हैं। ISBN 978-81-237-6909-7

विकिरण और मानव

एच.सी. जैन; अनु. : सतीश चंद्र सक्सेना पृ. 100 ₹ 100

प्रत्येक व्यक्ति जीवन भर निरंतर विकिरणों के विभिन्न रूपों यथा दृश्य प्रकाश, अवरक्त, पराबैंगनी, रेडियो तरंगों, एक्स-रे तथा विशेष रूप से अंतरिक्ष किरणों के संपर्क में आता है। इन सबसे निर्मित विकिरण के जैविक प्रभाव सामान्य और असामान्य अथवा हानिकारक हो सकते हैं। इस पुस्तक का उद्देश्य मौलिक रूप से विकिरण के हानिकारक प्रभावों की चर्चा करना है। यह पुस्तक प्राकृतिक तथा मानव-निर्मित विकिरणों का अध्ययन, विकिरण में हुई प्रभावशाली खोजों तथा उद्योगों में हुई अप्रत्याशित घटनाओं को प्रस्तुत करती है तथा नाभिकीय ऊर्जा के लाभों को देखते हुए अन्य ऊर्जा स्रोतों से इसकी तुलना करने के साथ-साथ इसकी समस्याओं एवं जोखिम, जिनमें रेडियोसक्रिय अपशिष्ट का निपटान भी शामिल है, की जानकारी देती है। ISBN 978-81-237-6930-1

पक्षी कैसे उड़ते हैं

सतीश धवन

अनु. : रीतेश कृष्ण सिन्हा पृ. 90 ₹ 90

पक्षियों की उड़ान ने प्राचीन काल से ही मनुष्य को अपनी ओर आकर्षित किया है। परंतु हाल ही के वर्षों में विभिन्न क्षेत्रों से आए वैज्ञानिकों के प्रयासों द्वारा जंतु-उड़ान की गतिशीलता को समझना एवं समझाना कुछ हद तक संभव हो पाया है। इस विषय से अनभिज्ञ पाठक के लिए इस पुस्तक में जंतु-उड़ान के विकास पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ, पक्षियों की प्रजातियों की विद्यमानता तथा उनका वर्गीकरण, डैनों तथा पंखों की मांसल संरचना का विवरण तथा पक्षियों के अवसारण एवं अवतारण के मूल सिद्धांत शामिल किए गए हैं। प्रस्तुत पुस्तक में पक्षियों के उड़ान कौशल व तकनीक को सरल शब्दों में समझाने का प्रयास किया गया है तथा विषय की स्पष्टता के लिए पक्षी-उड़ान के मुख्य प्रकारों तथा उड़ान भरने, मँडराने व ज़मीन पर उतरने के समय पक्षियों की गति दर्शाते चित्र भी प्रस्तुत किए गए हैं।

ISBN 978-81-237-6973-8

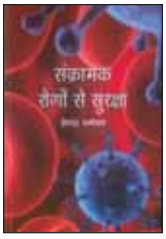

संक्रामक रोगों से सुरक्षा

प्रेमचंद्र स्वर्णकार पृ. 216 ₹ 195

समस्त विश्व में मृत्यु का एक बड़ा कारण संक्रामक रोग हैं। आज चिकित्सा विज्ञान ने बहुत-सी बीमारियों पर नियंत्रण पा लिया है मगर अभी भी ऐसे कई संक्रामक रोग हैं जिनके सफल इलाज के लिए परीक्षण जारी हैं। नई-नई खोजों और टीकों का आविष्कार हुआ है और अभी भी इस दिशा में वैज्ञानिक प्रयासरत हैं। इन रोगों से सुरक्षा के लिए केवल बेहतर इलाज ही नहीं बल्कि स्वास्थ्य कार्यक्रमों के प्रति जन-जागरूकता का होना बहुत आवश्यक है। इसके अभाव में किसी भी खोज एवं रोग नियंत्रण कार्यक्रम को पूर्ण सफल नहीं माना जा सकता। प्रस्तुत पुस्तक के पहले भाग में संक्रामक रोगों के प्रकार, उनके फैलाव और नियंत्रण के बारे में विस्तार से बताया गया है। कुपोषण क्या है और संतुलित भोजन किसे कहते हैं तथा इससे होने वाली हानि व लाभों को भी सरल भाषा में समझाया गया है। पुस्तक के दूसरे भाग में जानलेवा संक्रामक रोगों जैसे डेंगू, मस्तिष्क ज्वर, हैजा, क्षय रोग, फाइलेरिया, कृमि रोग, रूमेटिक ज्वर, मलेरिया, जलांतक एवं यौन रोगों के साथ-साथ बच्चों के जानलेवा रोग जैसे घटसर्प, टिटेनस आदि के संक्षिप्त विवरण के साथ बचाव के उपाय भी सुझाये गए हैं। ISBN 978-81-237-6972-5

स्वास्थ्य-रक्षक चिकित्सा (आयुर्वेद यूनानी)

खेम भाई पृ. 212 ₹ 150

आयुर्वेदाचार्यों के मतानुसार मानव शरीर में त्रिधातु पाई जाती हैं। पहली वात, दूसरी पित्त तथा तीसरी कफ। वात, पित्त तथा कफ का शरीर में कम-ज्यादा के अनुपात में होने से मानव शरीर रोगग्रस्त हो जाता है। अतः इन्हें 'त्रिदोष' के नाम से भी जाना जाता है। शारंग्धर, सुश्रुत, चरक, वाग्भट, चक्रपाणिदत्त, च्यवन तथा पाराशर ऋषि-मुनियों ने अपने आयुर्वेद ग्रंथों में शरीर को निरोगी बनाए रखने के नियम व उपाय सुझाए हैं, जिन्हें अपनाकर शरीर को रोगों से बचाया जा सकता है। लेकिन एक साधारण व्यक्ति को न तो इन नियमों आदि की संपूर्ण जानकारी है और न ही आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में वह, अकसर चाह कर भी, इन नियमों का पालन कर पाता है, फलस्वरूप रोगी हो जाता है। रोग के गंभीर स्थिति में पहुँचने से पहले यदि उसका उपचार कर लिया जाए तो बेहतर है। प्रकृति ने हमें फल, सब्जी, द्रव्य, मसाले, पेड़-पौधों व जड़ी-बूटियों की इतनी सौगात दी है कि यदि हम उनकी जानकारी रखें तो छोटे-मोटे शारीरिक कष्टों को तो बिना किसी परेशानी के दूर कर सकते हैं। प्रस्तुत पुस्तक का उद्देश्य यही है कि आम व्यक्ति को इन प्रभावी आयुर्वेदिक-यूनानी औषधियों तथा सरल देसी चिकित्सा से संबंधित अन्य पद्धतियों से परिचित कराया जा सके।

ISBN 978-81-237-7078-9

दरभंगा साहित्यिक कार्यक्रम

पुस्तकें साझे तहजीब की तमीज है

23 अप्रैल, 2014 को विश्व पुस्तक एवं प्रतिलिप्यधिकार दिवस के अवसर पर दरभंगा, बिहार में दरभंगा साहित्यिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर 'पुस्तकें मनुष्य मात्र के लिए बेहतर उपकरण हैं' विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया, साथ ही राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत से प्रकाशित पाँच पुस्तकों का लोकार्पण भी किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे हिंदी के प्रसिद्ध विद्वान, पूर्व अध्यक्ष स्नातकोत्तर हिंदी विभाग, ल.ना.मि.वि.वि., दरभंगा प्रो. अजीत कुमार वर्मा ने कहा कि पुस्तकें साझे तहजीब की तमीज है। हर किताब में पूरी इनसानियत की साझेदारी होती है। पुस्तक को 'आईना' निरूपित करते हुए उन्होंने कहा, ''यह एक आईना है जो आपको आपसे आपकी मुलाकात करा देता है।'' उन्होंने कहा कि स्वयं को जानने का अवसर हमें पुस्तकों से ही प्राप्त होता है। उन्होंने इस विडंबना का भी जिक्र किया कि कैसे पुस्तक प्रकाशन पहले सामाजिक जिम्मेवारी हुआ करता था और अब यह व्यापार का साधन बन गया है। लेकिन उन्होंने आशा व्यक्त की कि ''इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के युग में भी पुस्तकें हमारी आत्मा की आवाज, हृदय का दर्द, बच्चों की किलकारियाँ और विद्वानों के दर्शन बनकर जनमानस में सदा जीवित रहेंगी।'' उन्होंने कहा, ''हमारे पास किताबें होंगी तो हमारी सभ्यता बची रहेंगी।''

पुस्तकों की प्रासंगिकता समाप्त नहीं हुई है

कार्यक्रम में मुख्य वक्ता, समालोचक एवं पूर्व अध्यक्ष, स्नातकोत्तर, हिंदी विभाग, ल.ना.मि.वि.वि., दरभंगा, डॉ. किरण शंकर प्रसाद ने कहा कि सरस्वती जब भाषा का रूप लेकर धरती पर उतरती है तो वही पुस्तक कहलाती है। उन्होंने कहा, ''किताबों से ही हमें साक्षरता, हुनर, विद्या, ज्ञान व दर्शन की प्राप्ति होती है।'' उन्होंने पुस्तक पठन की महत्ता पर बोलते हुए कहा कि जब हम पुस्तकें पढ़ते हैं तो देश और काल की सीमा से परे जाते हैं। उन्होंने कहा कि बाजारीकरण से जब हम सभी जूझ रहे हैं तो पुस्तकों को भी संघर्ष करना पड़ेगा। पुस्तकों की कीमतें बढ़ाते जाने के निजी प्रकाशनों की प्रवृत्ति की चर्चा के क्रम में उन्होंने राष्ट्रीय पुस्तक न्यास द्वारा किफायती कीमत पर पुस्तकों को जनसुलभ कराने के लिए उन्होंने न्यास की प्रशंसा की। डॉ. प्रसाद ने कहा कि तमाम विरोधी स्थितियों के बावजूद आज के युग में पुस्तकों की प्रासंगिकता कम नहीं हुई है। उन्होंने कहा ''मानव में जब तक आत्मा, भावना व संवेदना जीवित हैं तब तक पुस्तकें खत्म नहीं होंगी।''

पुस्तकों में शक्ति है

कार्यक्रम के विशिष्ट वक्ता, प्रख्यात नाटककार एवं प्रोफेसर, हिंदी विभाग, सी.एम. कॉलेज, दरभंगा, डॉ. अविनाश चंद्र मिश्र ने आज के इनसान और समाज के कायर, कमजोर और दुष्चरित्र हो जाने की चर्चा के क्रम में कहा कि, ''लेकिन पुस्तकों में इतनी शक्ति है कि वह मरते हुए को भी जीवन दे सकती है।'' उन्होंने आगे कहा कि पुस्तकें हमें अपने अंदर झाँकने का अवसर देती हैं। उन्होंने कहा, ''किताबों का साथ होना हवा के विरुद्ध चलने जैसा है।'' उन्होंने निष्कर्ष रूप में कहा, ''पुस्तकें हमेशा पढ़ी जाती रहेंगी।''

जिसके पास पुस्तक वही पंडित

दूसरे विशिष्ट वक्ता, लेखक एवं व्याख्याता, हिंदी विभाग, एम.एल.एस.एम. कॉलेज, दरभंगा, डॉ. अमरकांत कुमर ने पुस्तक के इतिहास पर विस्तार से जानकारी दी। पुस्तकों की महत्ता और उपयोगिता पर भी उन्होंने अनेक बातें कहीं। उन्होंने कहा ''पुस्तक की दुनिया बड़ी खूबसूरत होती है।'' उन्होंने संस्कृत में 'पुस्तक भवि पंडित' को उद्धृत करते हुए कहा कि जिसके पास पुस्तक है वही पंडित है। उन्होंने कहा, ''पुस्तक शिष्य और गुरु दोनों के ज्ञान का मार्ग प्रशस्त करती है।''

पुस्तकों के लिए पाठकीयता का संकट नहीं

संगोष्ठी का विषय प्रवर्तन करते हुए अपने बीज वक्तव्य में प्रख्यात गजलकार एवं स्वतंत्र लेखक डॉ. नरेंद्र ने कहा कि पुस्तकों के लिए पाठकीयता का संकट नहीं है, उससे आज भी हमारा लगाव प्रगाढ़ है। उन्होंने कहा, ''किताबें अब नहीं पढ़ी जातीं, यह अफवाह कुछ खास लोगों द्वारा खास मकसद से फैलाई जा रही है। इस उत्तर आधुनिकतावादी युग में विचार, साहित्य व सृजनशीलता के समाप्त हो जाने की अफवाह फैलाकर लोगों को पुस्तकों से दूर रखने की साजिश रची जा रही है।'' उन्होंने कहा, ''पुस्तकों के रहते विचार कभी समाप्त नहीं हो सकते।'' डॉ. नरेंद्र ने राष्ट्रीय पुस्तक न्यास की आज के कठिन दौर में भी पुस्तकोन्नयन के लिए प्रतिबद्धता की सराहना की।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए पत्रकार एवं व्याख्याता, एम.एल.एस.एम. कॉलेज, दरभंगा, डॉ. सतीश कुमार सिंह ने कहा कि आज के ऐसे दौर में जब लोग भौतिक सुख-सुविधा के उपकरण जुटाने में ही जिंदगी खपा देते हैं वैसे में पुस्तकों की उपादेयता पर आधारित इस संगोष्ठी में इतने लोगों का जुटना आश्वस्त करता है।

कार्यक्रम के सभी वक्ताओं ने दरभंगा में साहित्यिक कार्यक्रम कराए जाने के लिए राष्ट्रीय पुस्तक न्यास की भूरि-भूरि प्रशंसा की। उन्होंने भविष्य में भी ऐसे कार्यक्रम पुनः करवाए जाने की माँग की।

कार्यक्रम की शुरुआत में मंचस्थ अतिथियों एवं न्यास-प्रतिनिधि द्वारा राष्ट्रीय पुस्तक न्यास की पाँच पुस्तकों का लोकार्पण किया गया। लोकार्पित पुस्तकों के नाम थे—*स्त्री कथा : कथा अनंता* (रंजन जैदी), *नटखट कुप्पू के अजब-अनोखे कारनामे* (प्रकाश मनु), *हवेली का रहस्य* (सुकीर्ति भटनागर), *वो तीस दिन* (मोनिका गुप्ता) तथा *एक परंपरा का अंत* (डॉ. नरेंद्र)।

कार्यक्रम में आए अतिथियों के स्वागत एवं धन्यवाद ज्ञापन के साथ ही न्यास के संबंध में परिचयात्मक उद्‌बोधन एवं कार्यक्रम का समन्वय न्यास में हिंदी संपादक श्री दीपक कुमार गुप्ता ने किया।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत और उसकी गतिविधियों तथा प्रकाशनों के बारे में विस्तृत जानकारी के लिए अवलोकन करें :
वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in

पुस्तक परिचय

हम न मरब (उपन्यास); *ज्ञान चतुर्वेदी;* पृ. 328 ₹ 495
राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-02
'मृत्यु' को रचना के 'प्रतिपाद्य' के रूप में रखकर वरिष्ठ लेखक की चौथी औपन्यासिक कृति। कृति में ईश्वर, काल, मृत्यु, नश्वर, अनश्वर आदि से भिड़ंत के साथ-साथ 'मृत्यु की अवहेलना' भी है। कबीर के कथन 'हम न मरब मरिहै संसारा' के आदि अंश को लेकर लेखक भी कभी नहीं मरने की घोषणा करते हैं।

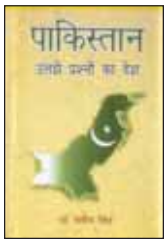

पाकिस्तान : उलझे प्रश्नों का देश (निबंध)
महीप सिंह; पृ. 136 ₹ 200
साहित्य भारती, के-71, कृष्णा नगर, दिल्ली-51
पाकिस्तान-निर्माण की पृष्ठभूमि, वहाँ लोकतंत्र का विखंडन, सैनिक तानाशाही, धार्मिक उन्माद और उस देश की आम जनता की धारणाओं और आकांक्षाओं को समझने का प्रयास है यहाँ। लेखक ने देश की विभाजन की पीड़ा को गहराई से झेला है। वह यह भी विचार करते हैं कि क्या देश का विभाजन अपरिहार्य ही था?

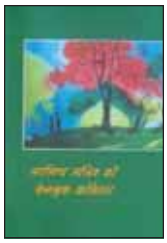

लालित्य ललित की फेसबुक कविताएँ; पृ. 104 ₹ 70
बोधि प्रकाशन, एफ-77, सेक्टर-9, रोड नं.-II, करतारपुरा इंडस्ट्रियल एरिया, बाईस गोदाम, जयपुर-302006
कविताएँ पहले कागज पर लिखी जाती थीं, अब भी लिखी जाती हैं, पर नई प्रौद्योगिकी ने कविता लेखन के तौर-तरीके को भी बदल डाला—कविताएँ अब सीधे फेसबुक पर लिखी जाने लगी हैं। वैसे, कलम, कागज और कविता का त्रिवेणी-संगम अब भी बना हुआ है। संपादक सह कवि लालित्य ललित की ये फेसबुक कविताएँ नए कहन में नयेपन के साथ आई हैं, तो इनका स्वागत किया ही जाना चाहिए।

चम्बल में सत्संग (दोहा संग्रह)
अशोक 'अंजुम'; पृ. 96 ₹ 150
सरस्वती प्रकाशन, 'सारस्वतम', 1, बी.एन. छिब्बर मार्ग, देहरादून-248001
दोहों की चमक कई सौ वर्षों के बाद भी फीकी नहीं पड़ी है। दोहे आज भी लिखे जा रहे हैं। दो पंक्तियों में बड़ी-से-बड़ी बात कह डालने का माद्दा होता है एक दोहे में। धीमी आँच पर पके दोहे पाठकों को अवश्य रुचेंगे, ऐसी आशा है।

बारह सत्ते चौरासी (कविता संग्रह)
संपा. : आशीष कंधवे
पृ. 128 ₹ 200
विश्व हिंदी साहित्य परिषद, एडी-94डी, शालीमार बाग, दिल्ली-88
सृजन के क्षेत्र में एक नया प्रयोग, जिसमें 12 कवियों की सात-सात मौलिक रचनाओं को शामिल किया गया है। संपादक जी का विचार है कि ऐसे संचयन का क्रम आगे भी जारी रखा जाएगा।

तुम कहाँ हो निन्नी (कहानी संग्रह); *सुधा गोयल;* पृ. 128 ₹ 200
राजेश प्रकाशन, जी-62, गली नं. 5, अर्जुन नगर, दिल्ली-51
बाईस कहानियों का संग्रह। कथाकार ने समाज में स्त्री की भूमिका को केंद्र में रखकर कथा रचना की है। एक स्त्री पुरुष की सहभागिनी ही नहीं, शौर्य, शक्ति और धैर्य का स्रोत भी होती है। ऐसे में एक स्त्री कथाकार की रचना में स्त्री पात्रों की महत्ता धुरी में रहना सहज स्वाभाविक है।

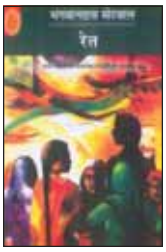

रेत (उपन्यास)
भगवानदास मोरवाल; पृ. 324 ₹ 195
राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-02
इस उपन्यास के केंद्र में है माना गुरु और माँ नलिन्या की संतान कंजर और उसका जीवन। कंजर यानी जंगल में घूमने वाला। एक दुर्दम्य समाज की कथा जिसमें स्त्री का वर्चस्व रुक्मिणी कंजर के माध्यम से प्रकट हुआ है। ऐसा लोमहर्षक आख्यान जो अब तक इतिहास के पन्नों में अतीत की रेत से अटा हुआ था। किस्सागोई शैली में एक नए आस्वाद का उपन्यास।

संत रविदास की रामकहानी; *देवेन्द्र दीपक;* पृ. 168 ₹ 250
आर्य प्रकाशन मंडल, IX/221, सरस्वती भंडार, गाँधीनगर, दिल्ली-31
संत रविदास के जीवन-दर्शन पर अपने किस्म की प्रथम औपन्यासिक कृति। इस कृति में संत रविदास के चिंतन के मर्म को उकेरने का प्रयास है और हाथ के श्रम के प्रति गहरी आस्था भी। अपने काव्यात्मक ललित गद्य के कारण कृति पठनीय बन पड़ी है।

एक और चेहरा (कथा संग्रह)
डॉ. तारिक असलम 'तस्नीम'; पृ. 108 ₹ 70
बोधि प्रकाशन, एफ-77, सेक्टर-9, रोड नं.-II, करतारपुरा इंडस्ट्रियल एरिया, बाईस गोदाम, जयपुर-302006
एक और चेहरा समेत कुल दस कहानियों का संग्रह। हमारे यहाँ हिंदू समाज है, मुस्लिम समाज है, सिख और ईसाई समाज है, लेकिन सीधे-सीधे एक भारतीय समाज की परिकल्पना से बचा जाता है। इस संग्रह में मुस्लिम समाज केंद्रित कहानियों का समुच्चय है—सभी कहानियाँ एक ही लेखक की। मुस्लिम समाज को पूरी संपूर्णता में देखा-समझा जा सकता है।

देशभक्त संन्यासी स्वामी विवेकानंद
शांता कुमार; पृ. 184 ₹ 300
किताबघर प्रकाशन, 4855-56/24, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-02
स्वामी विवेकानंद के 150वें जन्म वर्ष का समारोह दुनिया के कई हिस्सों में मनाया जा रहा है। प्रकांड विद्वान, विचारक, अध्यात्म पुरुष, भारतीय धर्म व दर्शन के प्रचारक ऐसे महान विभूति के जीवन के विभिन्न पहलुओं को लेखक ने इस पुस्तक में समेटा है। लेखक हिमाचल के पूर्व मुख्यमंत्री हैं और विवेकानंद साहित्य के अनन्य अध्येता।

मैं मुक्त हूँ (कविता संग्रह); *रेनू यादव;* पृ. 128 ₹ 150
माण्डवी प्रकाशन, 88-रोगनग्रान, देहली गेट, गाजियाबाद-201001
स्त्री की पीड़ाओं को देखने-समझने का जो नजरिया पुरुष रचनाकारों का होता है एक स्त्री रचनाकार उन्हें अलग ही तरह से देखती है, क्योंकि वह स्वयं ही एक स्त्री है और इस नाते भोक्ता भी। युवा कवयित्री रेनू ने ऑनर किलिंग की शिकार हो चुकी लड़कियों तथा पीड़ित स्त्रियों को अपनी पुस्तक समर्पित करके अपना इरादा स्वयंमेव ही जता दिया है।

माटी की खुशबू (कहानी संग्रह); *धीरेन्द्र प्रसाद सिंह;* पृ. 120 ₹ 250
शब्द सारथी प्रकाशन, 1897/17, गोविंदपुरी एक्सटेंशन, कालकाजी, नई दिल्ली-19
दस कहानियों का संग्रह। जहाँ देश की बहु-सांस्कृतिक एवं बहुभाषी समाज का अक्स इन कहानियों में झलकता है वहीं सुदूर अमेरिकी समाज का चेहरा भी इन कहानियों के माध्यम से पढ़ा जा सकता है।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास किताब क्लब

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत पाठकों की भाषा, संस्कृति, आयु-वर्ग और रुचियों की विविधता को ध्यान में रखते हुए विभिन्न विषयों की पुस्तकें प्रकाशित करता है। इस प्रकार विज्ञान, कला, पर्यावरण तथा कई अन्य विषयों के सूचना-प्रधान साहित्य से लेकर देश के विभिन्न क्षेत्रों के कथा साहित्य; और बच्चों के लिए सुंदर ढंग से चित्रित साहित्य तक व्यापक विषयों पर न्यास की पुस्तकें उपलब्ध हैं।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास की पुस्तकें 32 भारतीय भाषाओं और अंग्रेजी में, उचित मूल्य पर उपलब्ध हैं। न्यास का लगातार यह प्रयास रहा है कि वह अपने प्राधिकृत पुस्तक विक्रेताओं के एक बेहतर नेटवर्क के अलावा देश के प्रत्येक जिले में किताब क्लब सदस्यों के नामांकन के द्वारा अपनी किताबें पहुँचाए।

न्यास की पुस्तकों की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए न्यास 1994 से ही एक किताब क्लब योजना का संचालन कर रहा है।

नियम एवं शर्तें

सदस्यता

1. भारत का कोई भी व्यक्ति या संस्था राष्ट्रीय पुस्तक न्यास किताब क्लब का सदस्य बन सकता है।
2. व्यक्ति के लिए 100/-रुपये तथा संस्थाओं के लिए 500/- रुपये का नाममात्र का आजीवन अप्रतिदेय सदस्यता शुल्क।

मुख्य विशेषताएँ

1. सदस्यों को एक विशेष परिचय नंबर के साथ सदस्यता कार्ड जारी किया जाएगा।
2. किताब क्लब के सदस्य न्यास के क्षेत्रीय कार्यालयों, प्रदर्शनी/पुस्तक मेला स्टॉल, सचल वाहन एवं न्यास के अन्य विक्रय केंद्रों से न्यास की पुस्तकों की खरीद पर 20 प्रतिशत की छूट पा सकते हैं।
3. राष्ट्रीय पुस्तक न्यास सांस्थानिक सदस्यों को न्यास के मासिक बुलेटिन, सूचीपत्र तथा अन्य प्रचार सामग्री नियमित रूप से भेजेगा। सूचीपत्र, अन्य प्रचार/सूचना सामग्री तथा हमारे मुद्रित बुलेटिनों की सॉफ्ट कॉपी किसी व्यक्तिगत सदस्य को उनके अनुरोध पर डाक/ई-मेल द्वारा उपलब्ध कराई जा सकेगी।

डाकखर्च

4. पुस्तकें वी.पी.पी./बुक पोस्ट (अग्रिम भुगतान होने पर) से भेजी जाएँगी। 200 रुपये या उससे कम के आदेश पर पूरा डाकखर्च जोड़ा जाता है और 201 रुपये से अधिक के आदेश पर न्यास पूरा डाकखर्च वहन करेगा।

किताब क्लब सदस्यता प्रपत्र

(व्यक्तिगत / सांस्थानिक)

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत

नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया
वसंत कुंज, फेज-II, नई दिल्ली-110070
दूरभाष : 011-26707700 फैक्स : 011-26121883
ई-मेल : nbtindia@nbtindia, वेबसाइट : www.nbtindia.org.in

(कृपया इस प्रपत्र के साथ **नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया** के नाम 100/500 रुपये का बैंक ड्राफ्ट भेजें)।

1. नाम/संस्था (स्पष्ट अक्षरों में).....
   .....
2. पूरा पता.....
   .....
   .....पिन कोड.....
3. फोन/मोबाइल नं. .....
4. ई-मेल.....
5. व्यवसाय.....
6. उम्र.....
7. बैंक ड्राफ्ट का विवरण.....
   बैंक ड्राफ्ट सं. एवं तिथि.....
   द्वारा जारी.....
   प्राप्य बैंक.....

मैंने रा.पु. न्यास किताब क्लब की सदस्यता के नियम-विनियम पढ़ लिए हैं और ये मुझे मान्य हैं ।

हस्ताक्षर

स्थान : .....

दिनांक : .....

(क्रम सं. 1,2,4 तथा 7 अनिवार्य हैं)।

— — — — — — — — — — — — — — — — — — — —

मैं.....श्री/श्रीमती/सुश्री.....

से किताब क्लब सदस्यता के लिए.....रुपये प्राप्त करता हूं।

(हस्ताक्षर)

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के लिए

R.N.I. No. 64445/96
Postal Regd. No. DL (SW) 1/4077/2012-14
Licence to post without prepayment
L. No. U(SW) 23/2012-14
Mailing date 15/16 same month
Date of publication 08/5/2014

श्रद्धांजलि

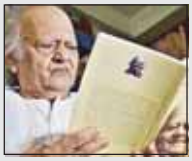

हिंदी कथा साहित्य में प्रेमचंद के बाद यथार्थवादी धारा के प्रमुख कथाकार **अमरकांत** का 17 फरवरी, 2014 को इलाहाबाद में निधन हो गया। वे 89 साल के थे। अमरकांत ने कहानी के अलावा, उपन्यास, संस्मरण एवं बाल साहित्य भी लिखा था। उन्हें ज्ञानपीठ, साहित्य अकादेमी एवं व्यास सम्मान से सम्मानित किया गया था।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास से प्रकाशित 'अमरकांत : संकलित कहानियाँ' उनकी श्रेष्ठ कहानियों का संकलन है। उनकी अन्य चर्चित कृतियाँ हैं–*जिंदगी और जोंक* (कहानी संग्रह), *सूखा पत्ता* (उपन्यास) आदि।

वरिष्ठ लेखिका **ज्योत्स्ना मिलन** का 4 मई, 2014 को भोपाल में निधन हो गया। वे 73 वर्ष की थीं। वह एक संपादक थीं और *अनुसूइया* पत्रिका का बरसों से संपादन कर रही थीं। ज्योत्स्ना मिलन ने कहानी, कविता और उपन्यास तीनों ही लिखे। 'अ अस्तु का' और 'केशर माँ' उनके प्रसिद्ध उपन्यास हैं। मुंबई में 1941 में जन्मीं ज्योत्स्ना जी ने गुजराती से हिंदी में अनेक अनुवाद भी किए।

रा.पु. न्यास से प्रकाशित पुस्तक *दूसरी आजादी 'सेवा'* (ले. : इला र. भट्ट) का अनुवाद उन्होंने ही किया था।

न्यासकर्मी का निधन

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत में सहायक के पद पर कार्यरत, **बेनी सिंह** का 17 फरवरी, 2014 को अकस्मात निधन हो गया। उन्होंने न्यास में 1979 में सेवारंभ की थी। न्यास के सभी सहकर्मी शोकसंतप्त परिवार के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना व्यक्त करते हैं।

सेवानिवृत्ति

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत में लगभग 40 वर्षों की लंबी सेवा के बाद **श्री रंजन कुमार** 30 अप्रैल, 2014 को सहायक निदेशक के पद तक पहुँचकर सेवानिवृत्त हो गए। श्री कुमार ने 1974 में न्यास में अपनी नियुक्ति के बाद दो प्रोन्नतियाँ पाईं। न्यास में अपनी लंबी सेवा-अवधि में उन्होंने अनेक विभागों में कार्य किया। न्यास के सभी सहयोगी उनके स्वस्थ एवं दीर्घायु होने की कामना करते हैं।

नेशनल बुक ट्रस्ट *संवाद* भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अधीन संचालित स्वायत्त संगठन, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत का मुख पत्र है।

इस पत्र के आलेखों में व्यक्त विचारों से न्यास की सहमति का होना आवश्यक नहीं है।

संपादक : **उमा बंसल**
कार्यकारी संपादक : **दीपक कुमार गुप्ता**
उत्पादन अधिकारी : **नरेन्द्र कुमार**

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
ई-मेलः office.nbt@nic.in
वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in

पाठकों से अनुरोध है कि वे **नेशनल बुक ट्रस्ट *संवाद*** के बारे में अपने विचार संपादक को लिखें।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की ओर से सतीश कुमार द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा पुष्पक प्रेस प्रा.लि., 203-204, डी.एस.आई.डी.सी. शेड, फेज-I, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित और राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 से प्रकाशित। संपादक :उमा बंसल।

एस.एस. इंटरप्राइजेज, प्रथम तल, जी.जी.-1/36बी, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 से टाइपसेट।

भारत सरकार सेवार्थ

डाक वापसी की दशा में कृपया इस पते पर वापस करें :
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070